हिन्दी की व्यथा

इं.मुकेश शर्मा
जूनियर इंजीनियर (वरिष्ठ ग्रेड)

हिन्दी के प्रति हृदय में उमडी , श्रृद्धा आज अगाध,
क्षुब्ध हृदय में ऐसा लगता, मना रहे हिन्दी का श्राद्ध।
वही महीना पितृपक्ष जब श्राद्ध मनाये जाते हैं,
कैसा विचित्र संयोग तभी , हिन्दी दिवस मनाये जाते हैं।
लुटती खूब दावतें, पैसा खूब बहाया जाता है,
धरातल पर देखें तो कोई अन्तर नजर ना आता है।
पैदा होते होनहार, पब्लिक स्कूल में डाल दिया ,
हिन्दी ना बोल पाये घर पर , ऐसा हर प्रबन्ध किया।
खुश होते जब अंग्रेजी में होनहार गुर्राता है,
खुद देख औरों से कहते बेटा पब्लिक स्कूल में जाता है।
पढ़कर जब ये बन जाता, किसी ऑफिस का अधिकारी ,
हिन्दी दिवस मनाने की तब आती है इसकी बारी ।
तुच्छ समझकर जिस हिन्दी से, इनको समाज बचाएगा,
समझ सको तो समझो ? कैसे ये हिन्दी दिवस मनायेगा ।
कैसे काम करे हिन्दी में, अंग्रेजी माध्यम से पढ़ने वाला,
प्रश्न खड़ा है मुँह बाये, कैसे इसका हल जाये निकाला।
अभी तो हम खाना पूर्ति में करते हैं विश्वास ,
जब चेते तो भला क्या होगा , हिन्दी की अन्तिम निकल जायेगी सांस।
ढूढ़ रहे हैं अभी तो देखो, सरकारी भोज में अपना स्वाद ,
क्षुब्ध हृदय में ऐसा लगता मना रहे हिन्दी का श्राद्ध।
दृढ़ प्रतिज्ञ हो जाओ यदि सच्ची हिन्दी चाहते हो ,
हिन्दी प्रेमी बच्चे उपजाओ, क्यों अंग्रेज उगाते हो ।
जड़ पर चोट करो समस्या के , ठहर नहीं फिर पायेगी,
तब देखो हिन्दी भाषा, प्यारी सबकी बन जायेगी ।
नहीं मनेंगे दिवस सप्ताह , वर्ष पर्यन्त होगी हिन्दी,
तब बन पायेगी सचमुच में हिन्दी भारत की बिन्दी ।